

0851CH15

पञ्चदशः पाठः



प्रहेलिकाः

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्राय: विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के किवयों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानिसक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

कस्तूरी जायते कस्मात्? को हन्ति करिणां कुलम्? किं कुर्यात् कातरो युद्धे? मृगात् सिंहः पलायते ।।।।।

> सीमन्तिनीषु का शान्ता? राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः? विद्वद्भिः का सदा वन्द्या? अत्रैवोक्तं न बुध्यते ।।2।।

कं सञ्जघान कृष्ण:? का शीतलवाहिनी गङ्गा? के दारपोषणरता:? कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ॥३॥

> वृक्षाग्रवासी न च पिक्षराज: त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि:। त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघ: ॥४॥

भोजनान्ते च किं पेयम्? जयन्तः कस्य वै सुतः? कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्? तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥५॥

प्रहेलिकानामुत्तरान्वेषणाय सङ्कोताः

प्रथमा प्रहेलिका - अन्तिमे चरणे क्रमशः त्रयाणां प्रश्नानां

त्रिभि: पदै: उत्तरं दत्तम्।

द्वितीया प्रहेलिका - प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चरणेषु प्रथमस्य वर्णस्य

अन्तिमवर्णेन संयोगात् उत्तरं प्राप्यते।

तृतीया प्रहेलिका - प्रतिऽचरणे प्रथमद्वितीययो: प्रथमत्रयाणां वा

वर्णानां संयोगात् तस्मिन् चरणे प्रस्तुतस्य

प्रश्नस्य उत्तरं प्राप्यते।

चतुर्थप्रहेलिकायाः उत्तरम् - नारिकेलफलम्।

पञ्चमप्रहेलिकाया: उत्तरम् - प्रथम-प्रहेलिकावत्।



हन्ति – मारता/मारती है

कातरः – कमजोर

सीमन्तिनीषु - नारियों में

कोऽभूत् (क:+अभूत्) - कौन हुआ

सञ्जघान - मारा

कंसञ्जघान (कंसं+जघान) - कंस को मारा

शीतलवाहिनी - ठंडी धारा वाली



काशी की भूमि पर बहने वाली काशीतलवाहिनी दारपोषणरताः पत्नी के पोषण में संलग्न केदारपोषणरताः खेत के कार्य में संलग्न वह व्यक्ति जिसके पास कंबल है कंबलवन्तम् वृक्षाग्रवासी पेड़ के ऊपर रहने वाला (वृक्ष+अग्रवासी) पक्षिराजः पक्षियों का राजा (गरुड़) त्रिनेत्रधारी तीन नेत्रों वाला (शिव) जिनके हाथ में त्रिशूल है (शंकर) शूलपाणिः त्वग् त्वचा, छाल बिभ्रन् धारण करता हुआ स्वर्ग, मोक्ष विष्णुपदम् तक्रम् छाछ, मठा शक्रस्य इन्द्र का

अभ्यास:



1. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) सीमन्तिनीषु का """ राजा """ गुणोत्तमः।
- (ख) कं सञ्जघान """ का """ गङ्गा?
- (ग) के कं न बाधते शीतम्।।
- (घ) वृक्षाग्रवासी न च न च शूलपाणि:।

2. श्लोकांशान् योजयत-

_c

किं कुर्यात् कातरो युद्धे

ख अत्रैवोक्तं न बुध्यते।



| | | | | P | | | |
|------------|--|---------------------|-------------------|------------------|--|--|--|
| | विद्वद्भिः का सदा वन्द्या | तक्रं श | क्रस्य दुर्लभम्। | g. | | | |
| | कं सञ्जघान कृष्ण: | मृगात् र्1 | संह: पलायते। | | | | |
| | कथं विष्णुपदं प्रोक्तं | काशीत | लवाहिनी गङ्गा। | | | | |
| 3. | उपयुक्तकथनानां समक्षम् | 'आम्' अनुपयुक्तकः | थनानां समक्षं न इ | इति लिखत- 🍳 | | | |
| | यथा- सिंह: करिणां कुलं | हन्ति। | आम् | | | | |
| | (क) कातरो युद्धे युद्ध्यते। | | | | | | |
| | (ख) कस्तूरी मृगात् जायते। | | | | | | |
| | (ग) मृगात् सिंहः पलायते। | | | | | | |
| | (घ) कंस: जघान कृष्णम्। | | | | | | |
| | (ङ) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्। | | | | | | |
| | (च) जयन्तः कृष्णस्य पुत्र | :1 | | | | | |
| 4. | सन्धिविच्छेदं पूरयत- | | | | | | |
| | (क) करिणां कुलम् | | + | | | | |
| | (ख) कोऽभूत् | | + | | | | |
| | (ग) अत्रैवोक्तम् | | + | | | | |
| | (घ) वृक्षाग्रवासी | | + | | | | |
| | (ङ) त्वग्वस्त्रधारी | | + | | | | |
| | (च) बिभ्रन | | + | | | | |
| | | | | No. | | | |
| 5. | अधोलिखितानां पदानां ति | नङ्गं विभक्तिं वचनः | च लिखत- | 0 | | | |
| | पदानि | लिङ्गम् | विभक्तिः | वचनम् | | | |
| यथा | – करिणाम् | पुँल्लिङ्गम् | षष्ठी | बहुवचनम् | | | |
| (V | | | | Į. | | | |
| प्रहेलिकाः | | | | | | | |
| 73W | ************************************** | E & | | ≥ (113) € | | | |

| | कस्तूरी | | ••••• | •••••• | ••••• | | | |
|-------------------------------|---|------------|------------|---|--------|--|--|--|
| | युद्धे | | ••••• | •••••• | •••••• | | | |
| | सीमन्तिनीषु | | ••••• | •••••• | ••••• | | | |
| | बलवन्तम् | | ••••• | •••••• | ••••• | | | |
| | शूलपाणि: | | ••••• | *************************************** | | | | |
| | शक्रस्य | | ••••• | *************************************** | | | | |
| 6. (अ) विलोमपदानि योजयत- | | | | | | | | |
| | जायते | शान्ता | | | | | | |
| | वीर: | पलायते | | | | | | |
| | अशान्ता | म्रियते | | | | | | |
| | मूर्खै: | कातर: | \bigcirc | | | | | |
| | अत्रैव | विद्वद्भि: | | | | | | |
| | आगच्छति | तत्रैव | | | | | | |
| (आ) समानार्थकपदं चित्वा लिखत- | | | | | | | | |
| (| (क) करिणाम्। (अश्वानाम्/गजानाम्/गर्दभानाम्) | | | | | | | |
| (| (ख) अभूत्। (अचलत्/अहसत्/अभवत्) | | | | | | | |
| (| ग) वन्द्या | ••••• | । (वन्दनीय | ा/स्मरणीया/कर्तनीया) | | | | |
| (| (घ) बुध्यते। (लिख्यते/अवगम्यते/पठ्यते) | | | | | | | |
| | (ङ) घट:। (तडाग:/नल:/कुम्भ:) | | | | | | | |
| (| (च) सञ्जघान। (अमारयत्/अखादत्/अपिबत्) | | | | | | | |
| | | | | • | | | | |
| | | | | | | | | |

7. कोष्ठकान्तर्गतानां पदानामुपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन अनुच्छेदं पूरयत-

एक: काक: """ (आकाश) डयमान: आसीत्। तृषार्त: स: """ (जल) अन्वेषणं करोति। तदा स: """ (घट) अल्पं """ (जल) पश्यित। स: """ (उपल) आनीय """ (घट) पातयित। जलं """ (घट) उपरि आगच्छित। """ (काक) सानन्दं जलं पीत्वा तृप्यित।

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में दी गयी पहेलियों के अतिरिक्त कुछ अन्य पहेलियाँ अधोलिखित हैं। उन्हें पढ़कर स्वयं समझने की कोशिश करें और ज्ञानवर्धन करें यदि न समझ पायें तो उत्तर देखें।

- (क) चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः।

 महान् बिलष्ठो न च भीमसेनः।

 स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि

 सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥
- (ख) न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति। तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद॥
- (ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः। अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

उत्तर-(क) वृषभ:, (ख) नयनम्, (ग) पत्रम्

